B.A. II Pap
B.A Hons II

(1)

एलोरा का कैलास मन्दिर

Ellora Temple Of Kailash

राष्ट्रकूटों के काल में एक अद्वितीय मन्दिर का निर्माण हुआ जिसे शैलोत्खनित वास्तुकला का चरम उत्कर्ष स्वीकार किया गया है। एलोरा की पहाड़ी को काट एवं तराश कर बनाया गया यह कैलास नाम का एकाश्मक मन्दिर यदि शैलोत्खनन परम्परा की परिणति है तो राष्ट्रकूट युगीन द्राविड़ मन्दिर वास्तु का भी एक अनुपम दृष्टान्त है। इसकी दिव्य रचना के सम्बन्ध में रोजर फ्राई ने ठीक ही लिखा है कि "भारतीय वास्तु-कला पाश्चात्य कला की भांति संरचनात्मक सिद्धांतों पर नहीं वरन् एक ही ठोस पदार्थ को काट छांट कर हाथी दांत की मूर्ति की भांति ढालने की परम्परा पर आधारित है।"

एलोरा के कैलाश मन्दिर का निर्माण सम्भवतः प्रथम महत्वपूर्ण राष्ट्रकूट नरेश दन्तिदुर्ग के काल के प्रारम्भ हुआ तथा कृष्ण प्रथम के काल (758-83 ई०) में पूर्ण हुआ।

योजना में कैलाश मन्दिर पट्टदकल के विरूपाक्ष एवं कांची के कैलाशनाथ मन्दिर के तुल्य है। जिस प्रकार राष्ट्रकूटों को बादामी के चालुक्यों का सामाज्य अधिकृत किया उसी प्रकार औदार्य के साथ उनकी द्राविड़ शैली को भी प्रश्रय प्रदान किया। कैलाश मन्दिर के निर्माण में राष्ट्रकूटों का वह अदम्य उत्साह एवं धैर्य-सागर निहित है, वह महत्वाकांक्षा है जिसके बल पर उन्होंने गंगाघाटी से सिंहल तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया।

अत्यधिक श्रमसाध्य एवं दीर्घकालापेक्षित कैलास मन्दिर का उत्खनन कई चरणों में सम्पन्न हुआ। पूर्ण विकसित रूप में यह मन्दिर 300 फीट लम्बे तथा 200 फीट चौड़े आयताकार प्रांगण का निर्माण करता है। यद्यपि इस विशाल प्रांगण में अनेक सम्बद्ध कृतियाँ हैं, किन्तु इसके विमान एवं मण्डप सर्वाधिक आकर्षक एवं विस्मयजनक है।

विमान एवं मण्डप: कैलाश मन्दिर एक शिला-गर्त में स्थित है। विमान मण्डप, अन्तराल, नन्दिमण्डप तथा गोपुरम् एक ही अक्ष पर निर्मित है। विमान एवं मण्डप संयुक्त रूप से निर्मित है। 25 फीट उच्च अधिष्ठान पर स्थित होने के कारण यह आभासित नहीं होता है कि विमान-

Scanned with CamScanner

एवं मण्डप किसी गहरे गड्ढे में है। यह अधिष्ठान ज्यौतिज लहरों से भरा है जिसके मध्य सिंह-गज पंक्ति बनी है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सिंह-गज मन्दिर भार ढो रहे हों।

गर्भ-गृह अवलोत विमान इस मन्दिर का सर्वाधिक मोहक अंग है। यह धर्मराज रथ एवं काँची के कैलाशनाथ मन्दिर की भाँति पिरामिडाकार शिखर से युक्त है। लम्बवत् दीवार के ऊपर पिरामिडाकार शिखर चार पीढ़ों या खण्डों में विभाजित है। सबसे ऊपर केन्द्र पर स्तूपिका है। आधार से स्तूपिका तक सम्पूर्ण विमान की ऊँचाई 95 फीट के लगभग है।

गर्भगृह के समक्ष मण्डप 16 स्तम्भों पर टिका है जिसकी छत सपाट है। यह गर्भगृह के प्रवेशद्वार के रूप में कार्य करता है जिसपर पहुँचने के लिए पश्चिम में एक दीर्घ सोपान माला है।

अन्तराल! गर्भगृह एवं मण्डप को जोड़ता हुआ एक लघु अन्तराल है। वास्तव में यह अन्तराल मण्डप से गर्भगृह में प्रवेश के लिए एक द्वार मात्र है जिससे इसका पृथक अस्तित्व आभासित ही नहीं होता।

प्रदक्षिणापथ: गर्भगृह एवं मण्डप के चतुर्दिक गहरी खाई है। इसके बाहर दीवार के अन्त:भाग में मुख्य मन्दिर के अनुकरण पर पाँच अन्य लघु मन्दिर तथा अनेक मण्डप खड़े हैं। इन मण्डपों से मुख्य गर्भगृह एवं मण्डप तक सेतु बने हैं। इस प्रकार सेतु के नीचे विमान के चतुर्दिक जो गड्ढानुमा रिक्त भाग है, वह प्रदक्षिणापथ के रूप में प्रयुक्त होता है।

नन्दि मण्डप:- मण्डप के सामने उसी रेखा में किन्तु पृथक स्वरूप एक मण्डप है जिसमें विशाल नन्दि की मूर्ति है। इसकी छत सपाट है। इसके उत्तर एवं दक्षिण में दो ~~विशाल~~ विशाल स्तम्भ खड़े हैं। जिनके शीर्ष पर त्रिशूल है।

गोपुरम: मन्दिर के विशाल प्रांगण में पश्चिम की ओर प्रवेशद्वार है जो दो मंजिला है। यद्यपि द्राविड़ कलाकार ने उसे गोपुरम का रूप देने का प्रयास किया है किन्तु यह गोपुरम का प्रारम्भिक रूप ही प्रतीत होता है।

अन्य अंग- स्तम्भ: कैलाशनाथ मंदिर में हर अंग विभिन्न मूर्तियों से अलंकृत है। प्रदक्षिणा पथ के चारों ओर अनेक उपमन्दिर या कक्ष बने हैं। इसे इस मन्दिर का कोष भी कह सकते हैं। क्योंकि इससे मन्दिर के मुख्य अंग गड्ढे में

Scanned with CamScanner

स्थित प्रतीत होते हैं। उत्तरी दीवार का एक कक्ष विशेष उल्लेखनीय है। जिसमें रावणद्वारा कैलाशपर्वत उठाने का दृश्य अंकित है। इसलिए उसे लंकेश्वर मण्डप के नाम से सम्बोधित किया गया है।

इस मन्दिर में स्तम्भ जहाँ आवश्यक अंग हैं, वहीं अलंकरण के साधन भी हैं। स्तम्भों का निर्माण कुम्भ-विस्तृत पत्र-पुष्प की भाँति किया गया है। स्वतंत्र स्तम्भ विशुद्ध द्राविड़ शैली में है जिसका आधार वर्गाकार या बहुकोणाक-हैं, उसके ऊपर अष्टपहलू स्तम्भ हैं जिसके शीर्ष पर कण्ठ एवं फलक हैं।

कैलाशनाथ मन्दिर यद्यपि एक ही शिला खण्ड को काटकर बनाया गया है किन्तु इसके विभिन्न अंगों में संतुलन एवं सौन्दर्यशास्त्र के नियमों पर आधारित है। कोई भी अंग अनावश्यक नहीं है। मूर्तियाँ भी इस प्रकार समुचित-स्थानों पर अलंकृत करती हैं कि मूर्तिकला एवं वास्तुकला में कहीं कोई विरोध नहीं है। वास्तव में सम्पूर्ण मन्दिर को एक विशाल एकात्मक मन्दिर-मूर्ति कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

यह मंदिर कलाकार की उस कल्पना को साकार करता है कि शिव कैलाशपर्वत पर निवास करते हैं पर्वत को काट कर पुनः मन्दिर-पर्वत का रूप निर्धारित करना कलाकार की मौलिक प्रतिभा की देन है। कलाकारों ने विशाल शिलाखण्ड में वह गति एवं लय उत्पन्न कर दिया है जिससे मन्दिर एक कविता की भाँति अन्तः करण को स्पर्श करता है। इसकी विशालता में भी कमनीय सौन्दर्य का बोध होने के कारण इसे सम्यक ही विश्व का महानतम पाषाण-काव्य कहा गया है—

The World's greatest rock Poem.

Dr. Birendra Prasad Singh
Associate Professor
Deptt of AI&AS
Shershah college Sasaram.

Scanned with CamScanner